विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-08-06-2021(एन.सी.आर.टी. पर आधारित)

पाठ: षष्ठ: पाठनाम भ्रान्तो बाल:

1. **निम्नलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत-**
   यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।
   रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि।।
   उत्तराणि- भाव आशय यह है कि स्वामी अपने कुत्ते को पुत्रवत् बड़े प्यार से पालता है और वह कुत्ता भी अपने स्वामी के घर के रक्षा रूपी कर्त्तव्य से एक पल के लिए भी लापरवाह नहीं होता। अतः हमें भी अपने कर्त्तव्य के प्रति सतत जागरूक रहना चाहिए।
2. **"भ्रान्तो बालः" इति कथायाः सारांशं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत।**
   उत्तराणि- 'भ्रान्तो बालः' कथा का सारांश - प्रस्तुत पाठ 'संस्कृत प्रौढ़पाठावलिः' नामक ग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। इस कथा में एक ऐसे बालक का चित्रण है, जिसका मन अध्ययन की अपेक्षा खेल-कूद में लगा रहता है। यहाँ तक कि वह खेलने के लिए पशु-पक्षियों तक का आवाहन (आह्वान) करता है किन्तु कोई उसके साथ खेलने के लिए तैयार नहीं होता। इससे वह बहुत निराश होता है। अन्ततः उसे बोध होता है कि सभी अपने-अपने कार्यों में व्यक्त हैं। केवल वही बिना किसी काम के इधर-उधर घूमता रहता है। वह निश्चय करता है कि अब व्यर्थ में समय गँवाना छोड़कर अपना कार्य करेगा।
3. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -**
   i. **स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि।**
   ii. **चटकः स्वकर्मणि व्यग्रः आसीत्।**
   iii. **कुक्कुरः मानुषाणां मित्रम् अस्ति।**
   iv. **स महतीं वैदुषीं लब्धवान्।**
   v. **रक्षानियोगकरणात् मया न भ्रष्टव्यम् इति।**

   उत्तराणि-

   vi. कीदृशानि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि?
   vii. चटकः कस्मिन् व्यग्रः आसीत्?
   viii. कुक्कुरः केषां मित्रम् अस्ति?
   ix. स किम् लब्धवान्?

x. कस्मात् मया न भ्रष्टव्यम् इति?